**भारत सरकार**
**पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय**
**लोक सभा**
**अतारांकित प्रश्न संख्या 3993**
**बुधवार, 12 अगस्त, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए**

## समुद्री जीव विज्ञान के लिए उन्नत समुद्री केंद्र

†**3993. श्री कृष्ण प्रसाद टेन्नेटी:**
**श्री प्रवीण पटेल:**
**श्री विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी:**
**श्री अमर शरदराव काले:**

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार देश के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में समुद्री जीव-संसाधनों के आकलन और निगरानी के लिए कार्यक्रम चला रही है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ख) पिछले तीन वर्षों में मछली पकड़ने के संसाधनों और समुद्री जैव-विविधता का अनुमान लगाने के लिए कितने वैज्ञानिक सर्वेक्षण किए गए हैं;
(ग) क्या इन सर्वेक्षणों से प्राप्त डेटा का उपयोग संधारणीय मत्स्य प्रबंधन और समुद्री संरक्षण में सहायता के लिए किया जा रहा है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(घ) सरकार द्वारा भारतीय जलक्षेत्र में समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के वैज्ञानिक अनुसंधान और निगरानी को सुदृढ़ करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

**उत्तर**
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी हाँ। भारत सरकार, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत समुद्री सजीव संसाधन एवं पारिस्थितिकी केंद्र (सीएमएलआरई), कोच्चि के माध्यम से भारत के 'एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन' (ईईजेड) में समुद्री जीवित संसाधनों (एमएलआर) का आकलन और निगरानी करने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम चलाती है जो इस संस्थान के उद्देश्यों के अनुरूप है।

(ख) पिछले तीन वर्षों (2023–2026) में, समुद्री सजीव संसाधन एवं पारिस्थितिकी केंद्र (सीएमएलआरई) ने भारतीय 'एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन' (ईईजेड) में मत्स्य संसाधनों और समुद्री जैव विविधता के आकलन के लिए लगभग 19 सर्वेक्षण किए हैं।

(ग) जी हाँ। समुद्री सजीव संसाधन एवं पारिस्थितिकी केंद्र (सीएमएलआरई) द्वारा तैयार किए गए वैज्ञानिक डेटा का उपयोग टिकाऊ समुद्री जीवित संसाधनों (एमएलआर) प्रबंधन, समुद्री संरक्षण और प्रमाण-आधारित नीति बनाने में किया जा रहा है। इसके मुख्य उपयोगों में शामिल हैं: भारतीय ईईजेड से मछली पकड़ने की संभावित पैदावार का अनुमान लगाना (हर आठ साल में किया जाता है), ईएसबीए (पारिस्थितिक और जैविक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों) की पहचान करना, जैव विविधता सूची और जीनोमिक संदर्भ पुस्तकालय विकसित करना, मछलियों के अंडे देने की जगहों और मौसमों की पहचान करना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं ('कन्वेंशन ऑन बायोलॉजिकल डायवर्सिटी' और एसडीजी-14 सहित) के लिए डेटा जमा करना तथा भारतीय 'एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन' (ईईजेड) के गहरे समुद्र और दूर के पानी में मछली पकड़ने के संसाधनों पर वैज्ञानिक रिपोर्ट प्रकाशित करना।

(घ) भारतीय जलक्षेत्र में वैज्ञानिक अनुसंधान, पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी और समुद्री जीवित संसाधनों के दीर्घकालिक आकलन को मजबूत करने के लिए उठाए गए कदम/पहल निम्नानुसार हैं।

- दीर्घकालिक अवलोकन और समुद्री जीवित संसाधनों (एमएलआर) कार्यक्रम के भाग के रूप में, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र की निगरानी जिसमें भारतीय 'एक्सक्लूसिव इकोनॉमिक ज़ोन' (ईईजेड) में मत्स्य संसाधन, जैव विविधता और पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारकों के साथ ही इनका आकलन और मैपिंग भी शामिल हैं।
- गहरे समुद्र के जैविक नमूनों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने और उनका दस्तावेजीकरण करने के लिए 'भवसागर राष्ट्रीय भंडार'
- आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकें और जीनोमिक संदर्भ पुस्तकालय, जिसमें आधुनिक वर्गीकरण और जैव विविधता अनुसंधान में मदद के लिए संग्रह और डेटा का डिजिटलीकरण शामिल है।
- समुद्री विज्ञान के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ क्षमता निर्माण और सहयोग।
- संवेदनशील समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं व अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के अनुरूप समुद्री जीवित संसाधनों के टिकाऊ प्रबंधन में मदद के लिए वैज्ञानिक अध्ययन।

*****